11. हिन्दू धर्म के देवी देवता और रीति रिवाज़

तुमने कक्षा 6 में लोगों के पूजा-पाठ और धर्म के बारे में कई बातें पढ़ी। शिकारी मानव, सिंधु घाटी के लोग, आर्य, आदि लोगों के धर्मों के बारे में तुमने पढ़ा था। गुरुजी की मदद से उन बातों को याद करो और चर्चा करो कि इनमें से कौन-कौन सी बातें आज भी हमारे धर्म में हैं।

आज के देवी देवता व पूजा के तरीके

अपने देश के बहुत सारे लोग हिन्दू धर्म को मानते हैं। हिन्दू धर्म मानने वाले लोग बहुत सारे देवी देवताओं की पूजा करते हैं, उन्हें तरह-तरह के तरीकों से पूजते हैं। दिया और अगरबत्ती जलाके, फूल और भोग चढ़ाके, मूर्तियों की पूजा होती है। कभी-कभी कुण्ड में अग्नि जलाके होम होता है। इसे यज्ञ भी कहते हैं। कभी-कभी बकरे या मुर्गे की बली भी चढ़ती है।

अपनी कक्षा में चर्चा करके इस तालिका को भरो–

देवी देवता

1. कौन सी देवियां पूजी जाती हैं?	*2. कौन से देवता पूजे जाते हैं?*	*3. कौन से जीव जन्तु पूजे जाते हैं?*	*4. कौन से पेड़ पौधे पूजे जाते हैं?*

पूजा करने के तरीके

1. जीवन में कब-कब यज्ञ करवाया जाता है और ब्राम्हणों को दक्षिणा दी जाती है?	*2. यज्ञ आदि किन देवताओं के नाम किया जाता है?*	*3. देवी माता के लिए पशु बलि कब दी जाती है?*	*4. किन देवी-देवताओं के लिए बलि चढ़ती है?*	*5. धूप, दीप भोग से किसकी पूजा होती है?*

भारत में हर जगह हिन्दू धर्म मानने वाले लोग शिव, विष्णु, राम, कृष्ण जैसे देवताओं को मानते हैं। दुर्गा, पार्वती, काली आदि देवी माताओं को मानते हैं, और कई पेड़-पौधों, जीव जंतुओं को भी पुजते हैं। अलग-अलग समय पर यज्ञ, ब्राम्हणों को दान-दक्षिणा, पशु-बलि और धूप, दीप, भोग से पूजा करना यह सब किया जाता है। तुम्हें क्या लगता है, कि अपने देश के सब लोगों का धर्म शुरू से ऐसा था? क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि हमारे पूर्वज हमेशा से आज के लोगों की तरह कई विधियों से कई देवी, देवताओं की पूजा करते थे?

बुद्ध और अशोक के समय में

अगर हम आज से 2500 वर्ष पूर्व लोगों के धर्म के बारे में पूछताछ करने निकलते तो क्या पाते? उन दिनों भारत में बहुत अलग-अलग तरह के लोग रहते थे। इन लोगों का रहन-सहन, पहनावा, रीति-रिवाज़, बोल-चाल सब एक दूसरे से भिन्न था।

पहले तुम पृष्ठ 101 के नक्शे में देखो, उन दिनों भारत में कौन-कौन लोग रहते थे। साथ ही यह भी देखो वे क्या काम करते थे - शिकार या खेती। नीचे की तालिका भरो।

लोग	उनका काम

ये सब लोग हमारे पूर्वज थे। इन लोगों के देवी-देवता पूजने के तरीके भी अलग-अलग थे।

1. शिकारियों का धर्म : जंगलों में जो शिकारी थे उनका धर्म कैसा था? हर शिकारी कबीले के अपने देवी देवता थे। कोई कबीला सांप को देवता मानता था, तो कोई पीपल के पेड़ को। कोई कबीला जंगली सुअर की पूजा करता था तो कोई और मछली, हाथी या फिर वानर को पूज्य मानता था। ये लोग नाच-गाकर पूजा करते थे। ये

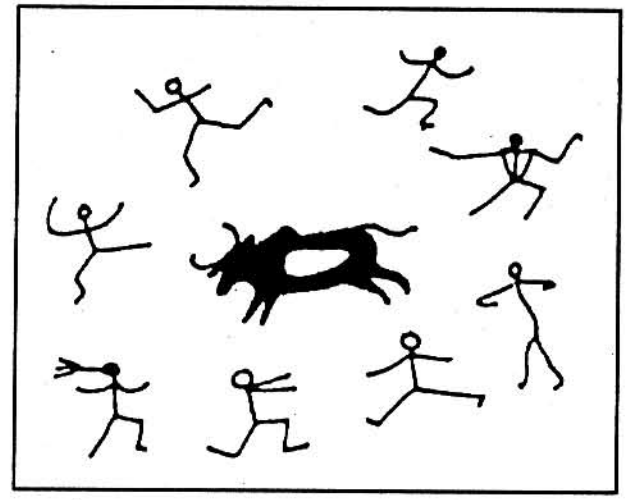

शिकारियों का नाच

लोग न तो यज्ञ करते थे, न पूजा पाठ न व्रत रखते थे।

2. खेती करने वालों का धर्म: उन दिनों खेती करने वाले कबीले भी थे। इन लोगों का धर्म कैसा था? इन कबीलों के भी अलग-अलग देवी-देवता थे। मगर आम तौर पर ये खेती करने वाले धरती को मां मानते थे - धरती अनाज आदि देकर लोगों के पेट जो पालती है। अक्सर देवी के क्रोध को शांत करने के लिये वे बकरा, भैंस, मुर्गा जैसे जानवरों की बलि चढ़ाते थे। फिर उसके मांस को प्रसाद के रूप में खाते थे। यही उनका पूजा करने का तरीका था। ये लोग अग्नि या राम या शिव की पूजा नहीं करते थे। न ही ये लोग यज्ञ आदि संस्कार करते थे।

3. वैदिक धर्म : उस समय कुछ और लोग रहते थे जो इन्द्र, वरुण, अग्नि, मित्र आदि देवताओं के लिये यज्ञ, हवन या होम करते थे। इन लोगों के बीच वेद मंत्र पढ़ना एक ज़रूरी संस्कार भी था। मगर ये लोग पीपल या सांप या देवी मां को नहीं पूजते थे। ये लोग नाच गाकर या देवी को बलि चढ़ाकर पूजा नहीं करते थे।

4. शैव व वैष्णव धर्म : तुम सोच रहे होगे, क्या उन दिनों शिव, विष्णु, राम या कृष्ण की पूजा नहीं होती थी? क्या लोग मंदिरों में जाकर देवी देवताओं की पूजा नहीं करते थे?

हां, बुद्ध व अशोक के दिनों मंदिर बने ही नहीं थे। कुछ थोड़े से लोग शिव की पूजा करते थे, कुछ और विष्णु या राम की पूजा करते थे। यमुना नदी के पश्चिम में यदु व सूरसेन नाम के लोग रहते थे जो कृष्ण की पूजा करते थे। देवता की मूर्तियां बनाना, उन्हें नहलाना, धूप-दीप, भोग चढ़ाना, नाम जपना, यह सब उनका पूजा करने का तरीका था। ये लोग यज्ञ, या देवी मां की पूजा नहीं करते थे। शुरू में वैदिक धर्म मानने वाले लोग भी शिव, विष्णु की मूर्ति-पूजा के तरीके को तुच्छ मानते थे।

सही जोड़ियां बनाओ–

धरती को देवी मां मानकर पूजना, यज्ञ करना, मूर्ति को धूप-दीप चढ़ाना, ब्राह्मण को दान देना, देवी माता के लिये पशुबलि चढ़ाना, मिलकर नाचना, भैंसे की पूजा, देवता के लिये मन्दिर बनाना।

इस तरह अलग-अलग प्रांत या कबीले के लोगों के देवी-देवता अलग थे। उनकी पूजा की विधियां अलग-अलग थीं। यह स्थिति आज से 2500 साल पहले थी।

अशोक के समय के बाद धर्मों का मेलजोल

अशोक के समय के बाद भारत के लोगों के जीवन में बहुत सारे बदलाव आये। अलग-अलग प्रांतों में कई शिकारी कबीले खेती करने लगे। वे अन्य खेती करने वाले कबीलों से घुल मिल गये। अब लोगों ने एक दूसरे के धर्म की बातें भी अपनाईं, जैसे शिकारियों के सांप, नाग, भैंस, पीपल, आदि को अन्य खेती करने वाले भी पूजने लगे – उनके लिये नाच गान करने लगे। तो क्या उन्होंने देवी मां के लिये बलि चढ़ाना छोड़ दिया? नहीं, वे नाग और पीपल के साथ देवी मां को भी पूजते रहे। शिकारी लोग भी अब खेती करने वालों की देवी मां की पूजा करने लगे।

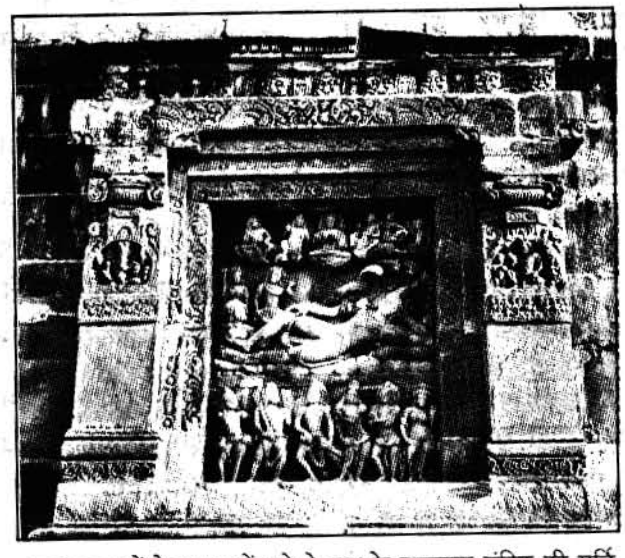

गुप्त राजाओं के समय में बने देवगढ़ के नारायण मंदिर की मूर्ति

इन लोगों के बीच ब्राह्मण भी आकर बसे। उन्होंने अपने धर्म की बातें, जैसे इंद्र, वरुण, अग्नि आदि देवताओं के लिये यज्ञ करना, वेद पढ़ना, ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देना आदि फैलाईं। उन दिनों ब्राह्मणों की बहुत प्रतिष्ठा थी। कई महत्वपूर्ण परिवारों ने ब्राह्मणों के धर्म की बातों को अपनाया। अब लोग पहले की तरह पीपल, नाग या देवी मां को पूजते थे, साथ ही वे यज्ञ करना, दान-देना ये बातें भी मानने लगे। ब्राह्मण भी अब पीपल, नाग, देवी मां की पूजा करने लगे।

धर्म में नई बातें कैसे अपनाई जाती हैं इसके उदाहरण तो तुमने भी देखे होंगे। जैसे संतोषी माता की पूजा कुछ साल पहले तक नहीं होती थी। फिर इस देवी की पूजा फैली और लोगों के धर्म में घुलमिल गई।

क्या तुमने हाल में किसी नये देवी, देवता, बाबा आदि की पूजा अपनाई जाती देखी है? चर्चा करो कि नए देवी, देवताओं की पूजा कैसे तुम्हारे यहां फैली और लोगों द्वारा अपनाई गई।

अशोक के समय के बाद शिव, विष्णु, और कृष्ण जैसे देवताओं की पूजा भी कई लोगों ने अपनाई। पूजा करने का एक नया तरीका भी बन रहा था। जगह-जगह शिव और विष्णु की मूर्तियां बनाकर मंदिर में रखी जाने लगीं। समुद्रगुप्त जैसे गुप्त राजाओं के समय से बहुत सारे मंदिर बनने लगे। उनमें रखी मूर्तियों को नहलाना, सजाना, धूप, दीप, भोग चढ़ाना, फूलों से अर्चना करना, यह बातें सब लोगों में फैलने लगीं। इन देवताओं को पूजने वालों ने भी ब्राह्मणों के प्रभाव में

ाकर शिव और विष्णु के लिये यज्ञ रना और वेद मंत्र पढ़ना शुरू कर देया।

क्या शिव और विष्णु को अपनाने के बाद लोगों ने अपने पुराने धर्म- नाग, पीपल, देवी या भैंसे की पूजा छोड़ दी? नहीं। लोग अपने पुराने देवी, देवता पूजते रहे और साथ-साथ उन्होंने एक दूसरे के देवी, देवता व उनको पूजने के तरीके अपनाये।

सत्यनारायण की पूजा में यज्ञ और ब्राह्मण भोजन

पहले जो लोग केवल नाग, भैंसा या पीपल को पूजते थे– वे अब देवी मां, शिव, विष्णु, कृष्ण को भी पूजने लगे, ब्राह्मणों को दान भी देने लगे और यज्ञ भी करवाने लगे।

जो लोग पहले केवल देवी मां को पूजते थे अब वे लोग नाग, पीपल, भैंसा, शिव, विष्णु, इन्द्र को भी मानने लगे। जो लोग पहले केवल इन्द्र, वरुण आदि देवताओं के लिये यज्ञ करते थे, वे अब नाग, भैंसा, पीपल, देवी मां, शिव, कृष्ण आदि देवताओं को भी पूजने लगे। इस तरह अलग-अलग लोगों का धर्म घुलमिल गया। इसी घुलने मिलने से हिन्दू धर्म बना है। आज भी हिन्दू लोग इसी मिले-जुले धर्म को मानते हैं।

मिले जुले धर्म के उदाहरण

जब हिन्दू लोग शंकरजी की पूजा करते हैं, तब साथ ही सांप, बैल, दुर्गा माता को भी पूजते हैं। जब सत्यनारायण की कथा होती है, तब नारायण (विष्णु) की पूजा के साथ वेद मंत्र पढ़े जाते हैं और यज्ञ (हवन) भी किया जाता है। नव दुर्गा के समय देवी मां की पूजा के साथ हवन भी किया जाता है और पशु बलि भी दी जाती है।

इन तीन उदाहरणों में से छांटो –

1. शिकारियों के धर्म से ली गई है .....

2. कौन सी बात वैदिक धर्म से ली गई है .....

3. कौन सी बात खेती करने वाले कबीलों के धर्म से ली गई है .....

4. कौन सी बात वैष्णव-शैव धर्मों से ली गई है .....

अमीर और गरीब लोगों के धर्म में फर्क

मगर सारे लोगों का धर्म एक जैसा नहीं रहा। गांव और नगर के धनी संपन्न और ताकतवर लोगों ने यज्ञ, हवन, शिव और विष्णु की पूजा आदि बातों को ज़्यादा अपनाया। इन लोगों ने ब्राह्मणों और मंदिरों को बढ़ावा दिया।

इनके विपरीत साधारण और ग़रीब लोग नाग, पीपल और देवी मां की पूजा अधिक करते रहे। ग़रीब लोगों के पास ब्राह्मणों को अच्छी दान-दक्षिणा देने व यज्ञ करवाने का साधन भी कम था। फिर उनके बीच ब्राह्मणों का धर्म कैसे फैलता? संपन्न और ऊँची जाति के लोग 'अछूत' माने जाने वाले लोगों को शिव और विष्णु के मंदिरों में प्रवेश नहीं करने देते थे। इस कारण भी ग़रीब लोगों में शिव व विष्णु को पूजने की प्रथा कम ही फैली।

इसीलिये जब कि अमीर लोगों के धर्म में यज्ञ-हवन, मंदिर, विष्णु व शिव बहुत माने जाने लगे, ग़रीब लोगों के धर्म में देवी पूजा, बलि चढ़ाना, नाग, पीपल, भैंसे की पूजा ज़्यादा मज़बूती से बनी रही।

भक्त और संत

राजा हर्ष के समय और उसके बाद कई भक्त और संत हुये। इन लोगों ने ब्राह्मणों के धर्म और आम लोगों के धर्म से अलग कुछ विचार, लोगों में फैलाये। ये संत कहते थे कि ईश्वर उसी को प्राप्त होता है जो सच्चे दिल से भगवान से प्रेम करे, भगवान की भक्ति में डूब जाये। मंत्रों से, संस्कारों से, ब्राह्मणों को दक्षिणा देने से या फिर पशुओं की बलि देने से ईश्वर नहीं मिलता। इस तरह के संतों के प्रभाव में भी कई लोग आये। खासकर ग़रीब लोगों के बीच इन संतों के विचार लगातार बने रहे।

ग़रीब लोग नाग, पीपल, और देवी मां की पूजा अधिक करते रहे।

अभ्यास के प्रश्न

1. सही या गलत बताओ–

अ. पूरे भारत में एक ही कबीले के लोग रहते थे।

ब. राजा अशोक के समय शिव व विष्णु की पूजा पूरे भारत में नहीं फैली थी।

स. शुरू में पीपल, नाग, भैंसे आदि का पूजन शिकारी कबीलों के धर्म में होता था।

द. वैदिक धर्म में देवी माता की पूजा होती थी।

प. शुरू में खेतीहर कबीले देवी माता के लिये यज्ञ करते थे।

2. खेतीहर कबीलों के लोगों ने अशोक के समय के बाद अपने धर्म में कौन सी नई बातें अपनाईं?

3. वैदिक धर्म मानने वाले लोगों ने अपने धर्म में क्या नई बातें अपनाईं?

4. शिव और विष्णु की पूजा करने वालों ने अपने धर्म में क्या नई बातें अपनाईं?

5. शिकारी कबीलों ने अपने धर्म में क्या नई बातें अपनाईं?

6. अमीर और गरीब लोगों के धर्म में क्या फर्क रहा व क्यों?

7. भक्त और संतो ने ईश्वर की पूजा का क्या रास्ता बताया?